Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हरियाणवी संस्कृति का आधार स्तंभ: हरियाणवी लोक संगीत

SUDESH

Research Scholar, Dept. of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

सारांश

विश्व के सभी क्षेत्रों के लोक जीवन की सही पहचान उस क्षेत्र के लोक संगीत से होती है, इसमें उस क्षेत्र विशेष के लोगों की आशाएं, आकांक्षाएं, कल्पनाएं और उनके आदर्श अभिव्यक्त होते हैं। जनमानस के जीवन के सुख-दुख, मिलन-विरह, खुशियों के सुअवसरों की सौगात, जन्म-विवाह के आनंद मंगल, सामूहिक उत्सव, आदि लोक जीवन के अभिन्न अंग है। भारतवर्ष विविध संस्कृतियों को अपने भीतर समेटने वाला वह राष्ट्र विशेष हैं, जिसकी पहचान पूरे विश्व में अनूठी है। भारत की अनेक कलाएं विदेशों में भी अपनी विशेषताएं स्पष्ट रूप से दर्शाती हुई वैश्विक स्तर पर मानव के अंतर्मन को प्रभावित करती हैं। भारत का लोक संगीत पूरे विश्व में अपनी विशेष पहचान बनाए एवं कायम किए हुए हैं। भारत के 29 राज्यों में हरियाणा का लोक संगीत विशेष रूपेण प्रतिष्ठित एवं प्रिय हैं। भारत की भांति हरियाणा प्रदेश की संस्कृति बहुवर्णी है। विरासत के गुणों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के कारण हरियाणा का जनमानस अपार हर्षित भाव से जनसमूहों, लोक एवं स्थानीय मेलों, विवाहों और उत्सवों को अपने जीवन में स्थान देता है, यही विरासतीय मूल्य लोक संगीत को बढ़ावा देते हैं। इसी कारण यहां के लोक संगीत की अमिट छाप सर्वत्र दिखाई देती है।

उद्देश्य: इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रदेश विशेष की सास्कृतिक मूल्यमञ्जूषा में लोक संगीत को सशक्त आधार स्तंभ सिद्ध करना है। यह शोधांश हरियाणा प्रदेश की संस्कृति एवं लोक संगीत के विशेष परिप्रेक्ष्य में सम्पन्न क्रियान्वयन है।

विधि: यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों, पूर्व शोधात्मक विश्लेषणों, लोक साहित्यिक विवेचनात्मक व्याख्याओं एवं लोक साहित्यिक रचनाधर्मिता पर आधारित कार्यक्रम है। इसमें विवेचनात्मक, अन्वेषणात्मक अनुसंधान पद्धति एवं व्याख्यात्मक शैली का उपयोग किया गया है।

बीज शब्द: हरियाणवी, लोक संगीत, हरियाणवी संस्कृति, धरोहर, आधार स्तंभ, जन-जीवन, लोकसंगीत की उपादेयता।

प्रस्तावना

विश्व के सभी क्षेत्रों के लोक जीवन की सही पहचान उस क्षेत्र के लोक संगीत से होती है,क्योंकि इसमें उस क्षेत्र विशेष के लोगों की आशाएं, आकांक्षाएं, कल्पनाएं और उनके आदर्श अभिव्यक्त होते हैं। लोक संगीत इतिहास के बदलते मानव मूल्यों और मानव जाति के इतिहास को चलचित्र के समान हमारे सामने उपस्थित कर देता हैं ।जनमानस के जीवन के सुख-दुख, मिलन-विरह, खुशियों के सुअवसरों की सौगात, जन्म, विवाह के आनंद मंगल, सामूहिक उत्सव, आदि लोक जीवन के अभिन्न अंग है। भारतवर्ष विविध संस्कृतियों को अपने भीतर समेटने वाला वह राष्ट्र विशेष हैं,जिसकी पहचान पूरे विश्व में अनूठी है।भारत की अनेक कलाएं विदेशों में भी अपनी विशेषताएं स्पष्ट रूप से दर्शाती हुई वैश्विक स्तर पर मानव के अंतर्मन को प्रभावित करती हैं। भारत का लोक संगीत पूरे विश्व में अपनी विशेष पहचान बनाए एवं कायम किए हुए हैं। भारत के 29 राज्यों में हरियाणा का लोक संगीत विशेष रूपेण प्रतिष्ठित एवं प्रिय हैं। भारत की भांति हरियाणा प्रदेश की संस्कृति बहुवर्णी है। इस संस्कृति का धरातल आध्यात्म की उर्वरा मिट्टी से तैयार हुआ है । इसमें वेदों की ऋचाओं का पावन लेप विद्यमान है, तो साथ ही आपसी भाईचारे, बड़ों का मान सम्मान और लोकाचार जैसे सांस्कृतिक मूल्यों से सम्पन्न यहां का लोक धर्म है ।सांस्कृतिक जीवन्तता को लोक संगीत के पोषक तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर अपने संस्कारों परंपराओं, आस्थाओं एवं मान्यताओं के कारण सबसे अनूठी है। विरासत के गुणों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के कारण यहां का जनमानस अपार हर्षित भाव से जनसमूहों में ,लोक एवं स्थानीय मेलों, विवाहों और उत्सवों को अपने जीवन में स्थान देता है , यही विरासतीय मूल्य लोक संगीत को बढ़ावा देते हैं।इसी कारण यहां के लोक संगीत की अमिट छाप सर्वत्र दिखाई देती है।इस प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत व लोक संगीत एक- दूसरे को बहुत ही अधिक प्रभावित करते हैं। लोक संगीत के विकास के लिए परंपरागत संस्कृति के प्रति आस्था का होना बहुत आवश्यक है। दूसरी ओर सांस्कृतिक परिपक्वता ही समाज के चारित्रिक उत्थान का प्रतीक सिद्ध होती है और

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति सामाजिक स्तर का निर्धारण भी करती है। हरियाणा प्रांत की लोक संस्कृति के संदर्भ में हरियाणा निवासियों की आशावादिता, बहुजन हिताय, विश्व मंगल की भावना, देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना, सावन के झूलों पर गाए जाने वाले मल्हार, फागुन की मौज-मस्ती, गरीबदास, निश्चल दास आदि संतों की लोक पावन वाणी एवं मुस्लिम फकीरों के फक्कड़पन में हरियाणवी संस्कृति की संपूर्ण झलक देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त जनमानस के जीवन से सम्बद्ध संस्कारों में, सूर्य उदय से लेकर सूर्यास्त तक किए जाने वाले सभी क्रियाकलापों में, हरियाणवी सांस्कृतिक विरासत में लोक संगीत का बहुत ही अहम् स्थान है। यहां का लोक संगीत यहां के जनमानस के लिए किसी निधि से कम नहीं। सामाजिक जीवन को सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए भी मानो लोक संगीत एक विशेष भूमिका निभा रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि लोक संगीत के कारण ही यहां की धनी विरासत संरक्षित और सुरक्षित है।

विश्व के सभी क्षेत्रों के मानव जीवन की असली पहचान वहां के लोक साहित्य से होती है जिसमें क्षेत्र के लोगों की आशाएं, कल्पनाए, आकांक्षाए और आदर्श अभिव्यक्त होते हैं। हरियाणवी लोक साहित्य यहां के लोक जीवन सहज अनुभूतियों का मर्मस्पर्शी काव्य है। किसी क्षेत्र का लोक साहित्य संपूर्ण मानव जाति के इतिहास को चलचित्र के समान हमारे सम्मुख उपस्थित कर देता है। लोक साहित्य को जब स्वर, लय, ताल में बांधकर प्रस्तुत किया जाता है तो वह लोक संगीत कहलाता है।

लोक संगीत का अर्थ, परिभाषा, उद्भव एवं विकास

लोक संगीत के बारे में जानने से पहले हमें संगीत की उत्पत्ति के बारे में जानना आवश्यक है। अधिकतर विद्वानों के मतानुसार संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी गई है यदि व्याकरण की दृष्टि से संगीत की व्याख्या की जाए तो संगीत दो शब्दों से मिलकर बना है सम+गीत । सम का अर्थ अच्छी प्रकार से या सुचारु ढंग से तथा गीत का अर्थ हैं गाना। अर्थात जो अच्छी तरह से सुचारू ढंग से गाया जाए उसे संगीत कहते हैं। पंडित शारंगदेव जी ने भी अपने ग्रंथ "संगीत रत्नाकर" में संगीत कि परिभाषा दी है जो इस प्रकार है:

"गीत वाद्य तथा नृत्य त्रय संगीत मुच्यते"[1]

अर्थात गायन वादन व नृत्य इन तीनों कलाओ के समावेश को संगीत कहते हैं। प्राचीन ग्रंथों में संगीत को दो भागों में विभाजित किया गया है:

1. मार्गी संगीत 2. देशी संगीत

मार्गी संगीत: जो संगीत नियमों में बंधा हो और जिसका प्रयोग सुनियोजित ढंग से किया जाए, वह मार्गी संगीत कहलाता है।

देशी संगीत: देशी संगीत वह संगीत है जिसका प्रयोग लौकिक उत्सवों पर लौकरूचि के अनुसार लोकरंजन के लिए होता है। वर्तमान में हम इसी संगीत को लोक संगीत कहते हैं।

लोक संगीत उतना ही प्राचीन है जितना लोक शब्द, वैदिक काल में जो गान गाया जाता था उसे इसी लोक संगीत का प्रारूप माना जा सकता है। लोक संगीत की परिभाषा से संबंधित मध्य काल से पूर्व कोई ग्रंथ नहीं मिलता। सर्वप्रथम मतंग जी द्वारा रचित ग्रंथ बृहदेशी में लोक संगीत की परिभाषा स्वरूप इसका क्षेत्र समस्त प्रजा से राजा तक माना है। मतंग जी ने सर्वप्रथम लोक संगीत को देसी संगीत कहा है।[2] लोक संगीत की परिभाषाएं अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दी है जो इस प्रकार है:

1 संगीत निबंध माला, पंडित जगदीश नारायण पाठक ,पृष्ठ-1

2 रेनू कुमारी, हरियाणा का लोक संगीत एवं उसका शास्त्रीय संगीत से पारस्परिक संबंध, पृष्ठ-9

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

महात्मा गांधी जी के अनुसार, "लोक संगीत में चराचर जगत गाता है।"[1]

रामनरेश त्रिपाठी जी के अनुसार "जब गृह देवियां एकत्रित होकर पूरे उन्माद के साथ लोक संगीत गाती हैं तो उन्हें सुनकर चराचर के प्राण तरंगित हो उठते हैं"[2]

निराला के अनुसार: हृदय की अनुभूतियां तरंगित होकर जब प्रकृति के मध्य बहने लगती है तो लोक संगीत का जन्म होता है।[3]

डॉक्टर इंद्राणी चक्रवर्ती के अनुसार, "देसी संगीत का अर्थ जनमन रंजन तो है परंतु कालांतर में जब इसके सिद्धांत बने तो वह केवल जनमन रंजन मात्र नहीं रहा बल्कि रस की प्रकाष्ठा दिखाने में समर्थ एक पद्धति बन गया।"[4]

अतः हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार प्राचीन काल में वेद-विद्या, श्रुति आदि सम्मत थी उसी प्रकार आज हमारा लोक संगीत भी मौखिक है। लोक संगीत समाज की संस्कृति का दर्पण होने के साथ-साथ प्रकृति से भी अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है अतः हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक संगीत ही अलौकिक संगीत है।

हरियाणवी संस्कृति का पोषक : लोक संगीत

"लोक संगीत किसी भी जनपद, समाज, प्रांत, देश अथवा राष्ट्र की संस्कृति का दर्पण होता है ।लोक संगीत किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों द्वारा निर्मित नहीं किया जाता ।यह तो समस्त समाज का उल्लास और उच्छवास होता है। अंतर मन की भावनाएं गीतों की रचयिता होती है और भीतर की प्राणवायु कहीं उसमें संगीत का निनाद फूंक देती है ।लोक संगीत के निर्माण में समग्र समाज का हाथ होता है। यह एक व्यक्ति की विरासत नहीं यह तो एक परंपरागत विधि है जिसे न तो किसी लेखनी ने कभी लिखा न संवारा और न सजाया। न ही किन्ही कृत्रिम वाद्य यंत्रों की स्वर लहरी पर यह आरूढ होता है । यह तो सजा सजाया केवल नैसर्गिकता के प्रवाह में बहता ही जाता है। सभ्यताओं और संस्कृतियों का उत्थान एवं पतन होता रहता है किंतु लोक संगीत बना रहता है। लोक संगीत का स्रोत कभी खुश्क नहीं होता और उसकी धारा कभी विरल नहीं होती । इसका प्रवाह तो सदैव प्रवाहित होता है और अविरल रूप से लोक संगीत की धारा सतत प्रवाह मान ही रहती है।"[5]

इसका जीवन्त उदाहरण हमारे हरियाणा प्रदेश का मनभावन लोक संगीत है। "किसी भी जनपद ,प्रदेश या क्षेत्र विशेष के अपने विश्वास, विचारधारा, धारणाएं, मान्यताएं, परंपराएं, रीति-रिवाज, रहन-सहन के तरीके, खान-पान, पहनावा और ओढ़ावा आदि के अलग अलग ढंग होते हैं, इन्हीं का समुच्चय ही सांस्कृतिक विरासत है।"[6] इसी विरासत का परिचायक प्रदेश विशेष से संबद्ध लोक संगीत होता है, क्योंकि लोक संगीत किसी भी संस्कृति का अभिन्न अंग सदैव रहा है। लोक संगीत जनमानस से निकटता से जुड़ा होने के कारण किसी भी क्षेत्र या प्रदेश विशेष की संस्कृति को प्रतिबिंबित करने का एक सशक्त माध्यम सिद्ध होता है। भारत के विशिष्ट लोक संगीत परंपराओं में हरियाणवी लोक संगीत परंपरा का गौरवपूर्ण इतिहास है। "हरियाणवी लोकसंगीत के अंतर्गत लोकगीत प्रमुख है जिनके दो भाग 'मुक्तक गीत प्रथा तथा कथात्मक गीत' हैं। मुक्तक गीतों के अंतर्गत संस्कार, ऋतु, कृषि,

1 संगीत पत्रिका: लोक संगीत अंक-1966, पृष्ठ-2
2 वही
3 संगीत पत्रिका: लोक संगीत अंक-1966, पृष्ठ-2
4 डॉक्टर इंद्राणी चक्रवर्ती, स्वर व रागों के विकास में वाद्यो का योगदान, पृष्ठ-61
5 डॉ. सत्येंद्र ,लोक साहित्य विज्ञान, पृष्ठ-194
6 डॉ.संतराम देशवाल, हरियाणा संस्कृति एवं कला, पृष्ठ-29

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

बाल एवं विविध गीत आदि सम्मिलित हैं जो विशेष अवसर के अनुकूल है। इसके अतिरिक्त हरियाणा के लोक संगीत को प्रमुख तीन भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार है:

- होली राग व नगाड़ा वादन।
- लोक राग।
- सांग संगीत।"[1]

इसमें कोई दो राय नहीं कि हरियाणवी लोक संगीत परंपरा दक्षिण भारतीय लोक परंपराओं जितनी समृद्ध नहीं हो पाई किंतु अतीत में समय-समय पर विदेशी आक्रमणों के बावजूद यह परंपरा बरकरार रही, यह कोई छोटी बात नहीं। जनमानस में आदि काल से चली आ रही अनुकरण की प्रवृत्ति ने हरियाणवी लोक नृत्य को पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रखने का सार्थक प्रयास किया है।

यहां के लोक नृत्य के अंतर्गत धमाल, खोडिया, डफ, लूर, होली, रासलीला आदि आते हैं। "हरियाणवी लोक संगीत में शास्त्रीय संगीत का समावेश बहुत उन्नत रूप में मिलता है लेकिन परंपरागत घराने किसी भी तरह से यहां विद्यमान नहीं है"[2]। इस प्रदेश के देहातों में प्रचलित लोक संगीत परंपरा वादी नहीं। इसका कारण यह है कि यहां का संगीत स्थान, स्थिति, देशकाल एवं साधन उपलब्धता के अनुसार आकार ग्रहण करता है। खेत की हरी भरी बरसीं की डण्डी को तोड़कर सिटी बजाने से लेकर, डेरू और डफ की ताल यहां जनमन के हृदयों को आनंदित करती हैं तो रास्ते में पड़े हुए ठीकरे भी स्वर को गति देने में सक्षम सिद्ध होते हैं बैल के गले में बंधने वाले मोटे मोटे घुंघरुओं की सुरमई ताल और उनके पांव के स्पर्श से उत्पन्न होने वाला घर्षण वह भी संगीत के वाद्य यंत्र की भूमिका निभाता है और वाद्य यंत्रों की खरी भूमिका पर जब ध्यान दें तो दिखाई पड़ता है कि समूचे हरियाणा प्रदेश में लोक संगीत का ही वर्चस्व है लोक गीतों पर नृत्य करती नृत्यांगनाए कोई और नहीं इसी धरती की रची बसी वह बालाएं हैं जो किसी भी वाद्ययंत्र की मोहताज नहीं तालियों की गड़गड़ाहट पर भी उनके पांव थिरकते हैं और जब ढोलक और नगाड़े व तबले पर ताल बजती है तो नृत्यांगनाओं को बराबर स्वतंत्रता रहती है कि वे अपनी इच्छा अनुसार संगीत व नृत्य में भावभंगिमा नृत्यगति पदचाप संगीत ताल व थिरकन में बदलाव ला सके।

हरियाणवी लोक नृत्य की विशेषता यह भी है कि इसमें नृत्य के साथ-साथ लोकगीतों का भी विशेष महत्व है। इतना ही नहीं लोकगीतों के साथ-साथ लोक वाद्यों का भी प्रयोग अपनी महता का स्वयं परिचायक होता है। सामान्यतः बीन, बांसुरी, सारंगी शहनाई, नगाड़ा, ढोलक, बैन्जू, खड़ताल व चिमटा जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग बहुलता में देखने को मिलता है। वास्तव में इन वाद्य यंत्रों की ताल के प्रयोग का ही कमाल है, जो एक सामान्य व्यक्ति को भी स्वयं से जुड़ने के लिए विवश कर देता है। हरियाणवी संगीत के साथ विशिष्ट वेशभूषाओं का समायोजन भी सदैव रहा है और हरियाणवी सांस्कृतिक विरासत को उत्कृष्टता प्रदान करने में इसका विशेष योगदान है। हरियाणवी परंपरागत पहनावे में सिर पर गोटेदार सितारों वाली चुंदड़ी, कमर पर पहनने के लिए कुर्ता तथा कटि के लिए के लिए घाघरे की अपनी अलग ही छटा है। स्त्रियों के लिए जरी की कुर्ती एवं बावन गज के घूम घाघरे की विशेष महत्ता हुआ करती थी जो अब केवल यद्यपि अतीत का हिस्सा बनकर रह गई है किंतु हरियाणा प्रदेश की पहचान है, जिसे सांस्कृतिक मंच और हरियाणवी चित्रपट आज भी जीवित रखे हुए हैं और यह पहचान आज तक बचाए रखने की सामर्थ्य केवल हरियाणवी लोक संगीत के कारण ही संभव हुई है। हरियाणवी संस्कृति का अभिन्न अंग स्त्री के द्वारा धारण किए गए विभिन्न आभूषण जैसे कि कानों में कर्णफूल गले में हंसली एवं कंठी, पायल, कंगन, अंगूठी आदि का शोभायमान होना यदि बरकरार है तो

1 डॉ.रीता धनकर, हरियाणा का लोक संगीत, पृष्ठ-29
2 डॉ. क्यूटी, संगीत शिक्षा, आरती पब्लिशिंग, पृष्ठ-2

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

लोक संगीत के कारण से ही। अब तक हरियाणवी सांस्कृतिक विरासत की जो जीवंतता बनी हुई है उसमें हरियाणवी लोक संगीत का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है।हरियाणा के लोक संगीत की अपनी एक विशिष्ट पहचान है ।जिस प्रकार हरियाणा के लोग जिंदगी को मौज मस्ती हर्षोल्लास के साथ जीते हैं उसी प्रकार यहां के लोक संगीत में भी जोश उमंग व मौज मस्ती के विवेक की सूची देखी जा सकती है।

वेदों की स्थली हरियाणा के लोक संगीत का ऐतिहासिक संदर्भ भी बहुत पुराना है। उदाहरण के स्वरूप में इस संबंध को जरा श्री कृष्ण की रासलीला से जोड़ कर देखिए,इसी काल में होली नृत्य की भी गिनती की जा सकती है। धमाल नृत्य का सीधा संबंध महाभारत से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार रसिया नृत्य का गीत संगीत केवल और केवल श्रीकृष्ण की प्रति छाया को दर्शाने वाला संगीत है। धमाल नृत्य मुख्यतः दो प्रकार का होता है एक तो वह जिसमें केवल पुरुष ही नृत्य करते हैं दूसरा वह जिसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों नृत्य करते हैं। इसी प्रकार हर्ष के समय गणिकाओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत करने की घटनाएं इतिहास में सम्मिलित हैं। "बाणभट्ट द्वारा रचित' हर्ष चरित' में दरबारी नृत्यों का वर्णन देखने को मिलता है। जिसका सीधा संबंध मुगलों से जुड़ा हुआ है। ऐसी मान्यता है कि जब बाबर ने भारत पर विजय प्राप्त की थी उस समय उसके दरबारी संगीतकार को भारत में पहली बार लेकर आए थे और विजय की खुशी में डफ की ताल पर नृत्य भी किया गया था"[1]। इसी प्रकार हरियाणा प्रदेश के किसी भी उत्सव पर्व और संस्कार में जुड़ने वाले शुभ अवसरों और उल्लास भरे आयोजनों की तरफ जब भी दृष्टिपात किया जाए तो केवल एक ही बात सामने आएगी कि सारी स्वर की लहरी केवल इन लोक वाद्य यंत्रों के प्रयोग का ही कमाल है। यही वह लोक संगीत है जो हर व्यक्ति को झूमने के लिए विवश कर देता है ।

विवाह संस्कार के द्वारा प्रत्येक माता पिता अपनी संतान को गृहस्थ जीवन की ओर प्रविष्ट कराने में अपना गौरवमय कर्म निर्वाहित करते हैं। सामाजिक मान्यताओं के अनुसार वैवाहिक संबंध देवलोक में जन्म के समय ही निर्धारित हो जाता है हरयाणवी संस्कृति के अभिन्न अंग विवाह संस्कार में सगाई से लेकर विदाई तक सभी वैवाहिक रीतियां और स्थितियां लोक संगीत की सलिला को साथ लिए प्रवाहित होती हैं। देहली पूजन से प्रारम्भ हो विवाह की तिथि निश्चित होने से लेकर कन्या के वैवाहित रूप में अपने पति के घर लौटने तक अथवा यूं कहें कि पुत्र के तिलक/सगाई से लेकर बहू के घर आने तक हर संस्कार संगीत की सुरमयी किरणों पर प्रवाहमान होता है। भात न्योतना, बान बैठाना, बनवाड़ा, मोड़, सेहरा, चाक पूजन, महण्डा बांधना, महंदी, हर रस्म लोक संगीत की मंजूषा को ही संग लिए सुशोभित होती है। विवाह के हर रस्म और सोपान पर लोक संगीत के बिना जरा भी कार्य संपादित नहीं होते। इसी प्रकार आप सभी संस्कार निर्वाहित होने में लोक संगीत की झलक हरियाणवी लोक संस्कृति में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं । इसके अतिरिक्त किसी बच्चे के जन्म से संबंधित गीत जैसे बधाई, पालने के गीत, छठी जच्चा, आदि और किसी व्यक्ति की मृत्यु संस्कार में डूम डूमणियों के द्वारा किया जाने वाला विलाप भी इसी का एक हिस्सा है।

"लोक संगीत हरियाणा प्रदेश की आत्मा का कांतिमय प्रतिबिंब कहें, तो अनुचित नहीं होगा ।यहां के लोक जीवन की सामाजिक पारिवारिक पारंपरिक सांस्कृतिक धार्मिक दार्शनिक एवं आर्थिक विरासत को स्पर्श करने का पैमाना यदि कुछ है, तो वह लोक संगीत ।लोक संगीत में लोक जीवन की आशाएं-आकांक्षाएं, समस्याएं- समाधान ,भाव-अभाव, परंपरा-प्रथा आदि के साथ साथ जीवन के यथार्थ-आदर्श, मनोविलास-कल्पना, हर्ष विषाद, प्रेम-क्षोभ, रुचि-अरुचि, पसंद-नापसंद, प्रवृत्ति-निवृत्ति आदि सभी का समावेश समाहित है। यदि हम हरियाणवी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत की बात करें और कहें कि रहन-सहन,

1 श्री रामलाल, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति, अंक-1966, पृष्ठ-85

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

खान-पान और ओढ़ावा- पहनावा, आचार विचार, राग द्वेष, सुख-दु:ख, स्पूर्ति सुस्ती, आकर्षण विकर्षण का आभास लोक संगीत के माध्यम से बखूबी होता है तो कहीं अतिशयोक्ति नहीं होगी"[1]।

अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के कारण 1 नवंबर 1966 को जन्मे हरियाणा ने तब से लेकर अब तक बेहद चहुंमुखी उन्नति की है, जिससे वह देश के खुशहाल प्रांतों की अग्रिम पंक्ति में आ खड़ा हुआ ।हमारे प्रदेश का भौतिक विकास तो खूब हुआ, लेकिन यहां के सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में भी बेहद बदलाव आया है। हरियाणा बनने के बाद के एक दशक तक तो घर में मेहमान आते ही झट से दूध से भरा हुआ लोटा आता था और भोजन के समय मेहमान की थाली में बूरा और घी बहते फिरते थे, परंतु अब तो सब कुछ उपभोक्तावाद, उपयोगितावाद और बाजारवाद की भेंट चढ़ चुका है। हरियाणा का 'जनवेश' भी लगभग बदल चुका है। पुरुषों के परिधान और स्त्रियों के पारंपरिक आभूषणों भी प्राय:लुप्त हो चुके हैं। लोकगीतों में वस्त्र आभूषणों की मांग करने वाली ,कसीदा कारी करने वाली, पनघट से पानी लाने वाली, चरखा कातने वाली, कसीदा करने वाली, चुंदड़ी पर सितारे लगाने वाली और दूस्सर, तीस्सर ले जाने की तैयारी करने वाली हरियाणवी नारियां ही अब कहीं भी दिखाई नहीं देती ।जाने कहां खो गई हैं सावन के झूले पर झूलने वाली, सासु जी के 'नाक तोड़ने' वाली, पथवारी पर मधुर गीत गाने वाली, सांझी मैया की आरती उतारने वाली, फाग, खोड़िया और लूर नृत्य करने वाली ग्रामीण स्त्रियां ।वैवाहिक लोक प्रथाओं को ही देखें तो पता चलता है कि वह भी आधुनिकता के दामन में लिपटी क्षीण हो रही हैं।

किंतु संतोष का विषय है कि बाज़ार वाद, उपभोक्तावाद की आंधी के बावजूद और मनोरंजन के साधनों में आए बदलाव के बाद भी लोक संगीत की स्वर लहरियां माहौल में गूंजती सुनाई देती हैं। शायद ही पूरे हरियाणा में कोई ऐसा विवाह उत्सव होगा, जहां हरियाणवी गीतों पर पांव ना थिरकते हो। ताता पाणी ए समन्दरां का, मेरे सिर पै बण्टा टोकणी, हेली मैं बड़गे चोर, आज्या बहू आंगणा तेरा कांगणा खुल्लै, के बिना कोई विवाहोत्सव सम्पन्न नहीं होता।और अब चूंदड़ी जयपुर तै मंगवाई सरीखे गीतों की धूम,नित नए लोक गीतों एवं संगीत से जुड़े नवीन प्रयास, हरियाणा सरकार के द्वारा स्थापित किए गए सांस्कृतिक कला केंद्र ,लोक संपर्क विभाग, खेलकूद विभाग, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के युवा कल्याण एवं सांस्कृतिक विभाग, निष्ठावान संगीत विभाग, कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं, हरियाणा साहित्य अकादमी आदि अपनी अमूल्य संस्कृति को बचाने का प्रयास कर रहे हैं ।परंतु इसके बावजूद भी जनमानस के भीतर सांस्कृतिक संरक्षण का शंख फूंकते रहना होगा। समय बड़ा विकट है, सांस्कृतिक आयोजन करने भर से इस अमूल्य धरोहर को बचाया नहीं जा सकता; क्योंकि विश्व स्तर पर देखें तो लोक संस्कृतियों का अस्तित्व ही संकट में दिखाई देता है। आज विश्व के सार्वभौमिक सांस्कृतिक रूप की बात की जा रही है । इस प्रयास में लोक संगीत तो अवश्य बचा रहेगा, किंतु यह अमूल्य सांस्कृतिक विरासत और कलाओं की तरह कहीं और कमजोर ना हो जाए इसकी और ध्यान देना पड़ेगा। लोक संस्कृति के स्त्रोतों के संयोजन के लिए, जनकल्याण की भावना के लिए, भौतिक विकास को लोकजीवन से जोड़ना ही होगा।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत उसके अनेक आयामों द्वारा उद्घाटित होती है जहां तक लोक संस्कृति का प्रश्न है वह सार्वभौमिक संस्कृति का एक विशिष्ट अंग है जिस की अनेक रश्मिंया उस संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है। इस दृष्टि से लोक संगीत किसी भी संस्कृति का अभिन्न अंग स्वतः ही सिद्ध हो जाता है। हरियाणवी लोक संगीत हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत का ऐसा अभिन्न रूप है जिसमें इस प्रदेश विशेष के समस्त जीवन का एक साकार चित्र प्राप्त होता है ।हरियाणवी लोक संगीत का अभिन्न अंग यहां के लोक वाद्य यंत्र सदा से समूचे लोक जीवन को झंकृत करते रहे हैं और करते रहेंगे ।हरियाणवी लोक संगीत का मूल रूप शाश्वत है, जो बाहरी प्रभावों से कभी भी न बदला है, न बदलेगा। यहां के लोक संगीत की

1 संभावना पत्रिका, वर्ष -1931, अंक- 22, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

आत्मा को कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता। हरियाणवी लोकसंगीत की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है और आज भी वह जन जन के कंठ में विद्यमान है। यह लोक संगीत हर पहलू से हमारे और हमारे समाज के लिए उपयोगी है। आज के कृत्रिम जीवन में तो इनकी महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। हर बनावटी जीवन जी रहे और एकाकीपन झेल रहे सभी को यह लगता है कि मानो लोक संगीत उन्हें अपने निकट बुला रहा है। इसीलिए तो इसमें अनुपम आनंद देने वाली शक्ति है। यह कदापि भी अनुपयोगी नहीं हो सकता, क्योंकि लोक संगीत में हरियाणवी संस्कृति का सांगोपांग चित्रण मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, डॉ शंकर लाल यादव
2. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ. सतेंद्र
3. धर्म की उत्पत्ति और विकास, डॉ. रामचंद्र वर्मा
4. मिथक और साहित्य, डॉ. नगेंद्र
5. लोकगीतों में समाज, पूर्णिमा श्री वास्तव, मंगल प्रकाशन, जयपुर
6. हरियाणवी लोक कथाएं, संपादक डॉ.शंकर लाल यादव
7. लोक साहित्य: विविध आयाम, डॉ. राम मेहर सिंह, मनुराज प्रकाशन
8. हरियाणवी लोकगीतों का समाज, डॉ. भीम सिंह मलिक
9. हरियाणा के कवि सूर्य लख्मीचंद, डॉ.के.सी .शर्मा
10. वीरभूमि हरियाणा, श्री भगवान देव
11. हरियाणा का इतिहास, प्रो. तेजा सिंह
12. हरियाणा संस्कृति एवं कला, डॉ. संतराम देशवाल
13. संगीत निबंध माला, पंडित जगदीश नारायण पाठक
14. हरियाणा का लोक संगीत एवं उसका शास्त्रीय संगीत से पारस्परिक संबंध, डॉ.रेणु कुमारी
15. स्वर व रागों के विकास में वाद्यो का योगदान, डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती
16. डॉ.रीता धनकर (2022). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत वाद्य तथा उनका महत्व. *स्वर सिंधु*. Vol.10, I.01, p.46-54.

पत्र एवं पत्रिकाएं

1.संभवाना, वर्ष 1931, अंक 22
2.संगीत पत्रिका: लोक संगीत अंक -1966
3.संगीत शिक्षा, आरती पब्लिशिंग